गुरुकृपा

श्रीगुरु की कृपा के विषय पर शास्त्रों से उद्धरण

ज्ञानेश्वर महाराज द्वारा रचित अमृतानुभव से एक श्लोक

बोधचंद्रकला या विकीर्णास्तत्र तत्र हि।

करोत्येकत्र ताः सर्वा यत्कृपापूर्णिमातिथिः।।

श्रीगुरु की कृपा से ही साधना की समस्त चन्द्रकलाएँ
आत्मसाक्षात्कार की पूर्णिमा में परिणत होती हैं।

अमृतानुभव, अध्याय २, श्लोक ७

डिज़ाइन व अंग्रेज़ी भाषान्तर : © २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।